

विमल कुमार लहरी , Ph.D.

असि. प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

Email: yimalk.lahari1@bhu.ac.in

Abstract

यह शोध-पत्र अनुभवजन्य पद्धति पर आधारित है, जिसमें लोकजन पर कोरोना महामारी के मनोवैज्ञानिक प्रभाव का समाजशास्त्रीय पाठ प्रस्तुत किया गया है। कोरोना महामारी ने लोकजन को अनिश्चित भय की तरफ ढकेला है। वैश्विक पटल पर इसके प्रभावस्वरूप भय, तनाव, अवसाद, चिड़चिड़ापन, आत्महत्या की मनोवैज्ञानिक पवृत्ति को बड़े स्तर पर देखा जा सकता है जिसमें महिलाएं, बूढ़े, बच्चे अधिक प्रभावित हुए हैं।

प्रमुख शब्द : अनुभवजन्य पद्धति, मनःस्थिति, अवसाद, तनाव, चिड़चिड़ापन, आत्महत्या, भय, क्वारंटाइन सेंटर, होम क्वारंटाइन, आइसोलेशन, अपनत्व, जागरुकता, हताशा, वित्तीय स्वतंत्रता



Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

परिचय एवं सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य

कोविड-19 का प्रभाव मानव जीवन के प्रत्येक पक्षों पर पड़ा है। जिसमें मानव की मनःस्थिति पर प्रभाव को बड़े स्तर पर देखा जा सकता है। कारोना काल में मानव मस्तिष्क एक ऐसे भय के दौर से गुजर रहा है, जिसके अन्त की सीमा नहीं दिखायी दे रही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के पहले महानिदेशक ब्राक चिसहोम का एक कथन है— “बगैर मानसिक स्वास्थ्य के सच्चा शारीरिक स्वास्थ्य नहीं हो सकता है। वास्तव में मानव जीवन क बीच उसके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य आपस में जुड़े हुए हैं। इसे हम अलग करके ना देख सकते हैं और ना ही अलग करके इनका मूल्यांकन कर सकते हैं।” दुनियां में हम महामारियों के प्रभाव के मनोवैज्ञानिक पक्षों का विश्लेषण करें तो साफतौर पर उसके प्रभाव देखें जा सकते हैं। 2003 सार्स महामारी ने बड़े स्तर पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डाला था जिसमें हम मानव के बीच तनाव, अवसाद एवं चिड़चिड़ेपन के साथ-साथ पैनिक आक्रमण को देख सकते हैं। उसी तरह आज कोरोना वायरस (कोविड-19) के प्रभाव को भी देखा जा सकता है।

आज जिस दौर में हम जी रहे हैं, वह दौर पूर्णतः सूचना क्रान्ति का दौर है, जहाँ पल-पल की घटनाओं से हम संचार के माध्यमों द्वारा अवगत हो रहे हैं। पूरी दुनियां में कोरोना के आक्रमण क प्रभाव

से हम विजुअली परिचित हो रहे हैं। इन सूचनाओं के आदान-प्रदान से भी मानव भय और आक्रांत से ग्रसित हो रहा है। इस लॉकडाउन की स्थिति में मानव जीवन पूरी तरह से पूर्व की गतिविधियों से दूर है। दूसरी तरफ उसे अपनी नौकरी, अपने व्यवसाय एवं मजदूरी छूट जाने की भी चिन्ता सता रही है। ये सभी पक्ष मानव के मनोवैज्ञानिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। अस्तु, इन्हीं सब पक्षों को अधेलिखित बिन्दुओं पर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है :

कोरोना वायरस (कोविड-19) के भय एवं लॉकडाउन के बीच लोकजन का आत्महत्या, तनाव, चिड़चिड़ापन, अवसाद जैसी मनोवैज्ञानिक समस्याओं का सामना

कोविड-19 कारण पूरी दुनियां में लोग पीछा न छोड़ने वाले भय के साथ जीवन जी रहे हैं। वहीं लॉकडाउन के कारण सभी गतिविधियां बन्द होने के कारण वे एक तरफ जहाँ घर में बैठकर बोर हो रहे हैं, तो वहीं दूसरी तरफ जीवन में आर्थिक गतिविधियां बन्द होने के कारण भय भी व्याप्त हैं। इस तरह से जीवन की दैनिक गतिविधियों से जुड़े खर्च जैसे- घर की खाद्य सामग्री, मकान का किराया, घर की इ.एम.आई., बच्चों की फीस, बिजली एवं टेलीविजन केबिल के बीच की पूर्ति कैसे हो, इन पर सोच-सोच करके लोकजन बड़े स्तर पर अवसाद, आत्महत्या, तनाव एवं चिड़चिड़ेपन का शिकार हो रहा है। इस बीच कुछ आत्महत्याएं भी हुई हैं।

आज दुनियां में जिस तरह मानव आर्थिक तंगी का सामना कर रहा है, उसमें वहाँ अवसाद और तनाव के कारण मानव आत्महत्या की तरफ भी अग्रसर हो सकता है। भारत ही नहीं, वरन् दुनियां में आर्थिक तंगी से उत्पन्न बदहाली के कारण कुछ छिटपुट आत्महत्याओं की घटनाओं को भी देखा जा सकता है। अभी हाल ही में उत्तर प्रदेश स्थित बाराबंकी जिले के एक परिवार के सभी सदस्य ने आर्थिक तंगी से आत्महत्या कर लिया। वहीं दूसरी तरफ डिप्रेशन एवं तनाव के कारण अन्य लोगों को विविध समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। दुनियां में जिस तरह को आर्थिक संरचना निर्मित हुई है, उसमें यह तनाव लम्बे समय तक चलने वाला लगता है। भारत ही नहीं वरन् सम्पूर्ण दुनियां के सामने कोविड-19 और लॉकडाउन से उत्पन्न भय के कारण लोगों में उत्पन्न डिप्रेशन, तनाव, चिड़चिड़ापन, अवसाद एवं आत्महत्या की प्रकृति एक बड़ी चुनौती के रूप में सामने खड़ी है। इस समस्या से कैसे निजात पायी जाये, इनके लिए राज्यों एवं सरकारों के साथ-साथ अर्थशास्त्रियों, मानवशास्त्रियों एवं समाज वैज्ञानिकों को मिलकर विमर्श करना होगा। विमर्श से निर्मित नीतियों को व्यावहारिक धरातल पर यथाशीघ्र क्रियान्वयन करना होगा। तभी शायद हम कोविड-19 से उत्पन्न इन मनोवैज्ञानिक विभत्सकारी समस्याओं से निजात पा सकते हैं।

बच्चों के समग्र जीवन पर प्रभाव

20वीं एवं 21वीं सदी के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि बचपन पूरी तरह से घरों में कैद

है। यहाँ तक कि स्कूल, कॉलेज, मठ—मंदिर, आश्रम आदि सभी जगहों से बचपन पूरी तरह से दूर है। बचपन खेलने—कूदने का वह संगम है, जहाँ एक बच्चा दूसरे बच्चे से कुछ सीखता है, तो वहीं दूसरों को कुछ सिखाता भी है। कोविड—19 संक्रमण एवं लॉकडाउन के बाद बाल जीवन की इस तरह की गतिविधियाँ पूरी तरह से बन्द हैं।

बाल जीवन की गतिविधियों के बंद होने से उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ—साथ विकास के अन्य पक्षों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की सम्भावना है। यदि इन प्रभावों को दरकिनार किया गया तो आने वाला समय कापफी चुनौतियाँपूर्ण भरा होगा। यह भारत ही नहीं वरन् पूरी दुनियाँ के लिए एक बड़ी समस्या होगी। इस पर सभी को मिलकर विमर्श करना होगा। इस संकटकाल की घड़ी में बच्चों का सम्पूर्ण विकास कैसे हो एवं उन्हें कैसे इस संकट की घड़ी से बाहर निकाला जाय। इस पर बेहतर ढंग से नीति—निर्माण एवं उसके क्रियान्वयन आवश्यकता है।

कोविड—19 महामारी के बीच प्राथमिक सम्बन्ध

कोविड—19 महामारी के प्रभाव एवं लॉकडाउन के बाद परिवार में जहाँ सम्बन्धों को मजबूती मिली है। वहीं परिवार से बाहर अभी भी एक भय की स्थिति बनी हुई है। कोरोना के भय का एक ऐसा दबाव लोगों पर बना हुआ है, जिससे परिवार से बाहर प्राथमिक सम्बन्धों के मायने बदल रहे हैं। लोगों का एक दूसरे से न मिलने के कारण सामाजिक व्यवस्था में प्राथमिक सम्बन्ध कमजोर पड़ते दिख रहे हैं। आज लगभग बाजार, कॉलेज, स्कूल, मठ—मंदिर, आश्रम, मस्जिद, धार्मिक स्थल पूरी तरह से बन्द हैं। ये ऐसे स्थान हैं, जहाँ विविध उपागम के साथ—साथ सामाजिक सम्बन्धों को भी गढ़ा जाता है। भारतीय समाज वास्तव में इसी तरह का समाज है।

कोरोना वायरस एवं लॉकडाउन के बाद प्राथमिक सम्बन्धों को गढ़ने की प्रक्रिया कमजोर पड़ी है। इस तरह कहा जा सकता है कि एक तरफ जहाँ परिवार में सामाजिक सम्बन्धों को मजबूती मिल रही है, वहीं परिवार से बाहर मानव मस्तिष्क में उठे द्वन्द्व, भय को जन्म दे रहे हैं, जिससे प्राथमिक सम्बन्ध, द्वितीयक सम्बन्धों की तरफ बढ़ रहे हैं। पूरी दुनियाँ के लिए यह एक महत्वपूर्ण चुनौती है। प्राथमिक सम्बन्धों के निर्माण की प्रक्रिया को मजबूती प्रदान करने हेतु लोकजन को कोरोना के भय से बाहर निकालकर सुरक्षित सामाजिक सम्बन्धों की स्थापना के लिए विकल्प तलाश करने होंगे।

क्वॉरंटाइन सेन्टर, आइसोलेशन, होम क्वॉरंटाइन के बीच मनःस्थिति

कोरोना संक्रमण के बाद पूरी दुनियाँ की मनःस्थिति बदल गयी है। कोरोना संक्रमण से पहले जहाँ व्यक्ति का परिवार के सारे सदस्यों के साथ उसकी भौतिक उपस्थिति रहती थी, वहीं कोविड—19 संक्रमण और इसकी आशंका में भी व्यक्ति अपने को 10 से 15 दिन होम क्वॉरंटाइन कर रहा है। उस

स्थिति में वह अपने परिवार एवं अपने परिजनो से दूरी रहने के कारण अपने को अलग-अलग महसूस करता है। वही स्थिति प्रवासी मजदूरों, कामगारों अथवा नौकरीपेशा लोगों की है। अन्य प्रदेशों से जब लोग अपने घर और गाँव पहुँच रहे हैं तो उन्हें होम क्वारंटाइन की बजाय गाँव अथवा उस क्षेत्र में बनाए गये क्वारंटाइन सेन्टर में 15 दिन समय व्यतीत करना है। ऐसी स्थिति में एक मनोवैज्ञानिक दबाव हमेशा बना रहता है, जबकि कोरोना से पहले परदेशियों के घर आने पर खुशी और उत्सव का माहौल होता था, वहीं आज इस दौर में भय की स्थिति बनी हुई है।

क्वारंटाइन सेन्टर में रहने के कारण व्यक्ति अपने को आंशिक रूप से परिवार से दूर पाता है। ऐसी स्थिति में उसका मन एवं मस्तिष्क सदैव एक भय के दबाव में बना रहता है। वैसे अब तक के मानव इतिहास में इस तरह का जीवन लोग व्यतीत नहीं किये थे। यह भी महत्वपूर्ण दबाव का कारण है। कुल मिलाकर आनुभविक अध्ययन के आधार पर जो तथ्य दृष्टिगोचर होते हैं, उससे यह अवधारणा निर्मित होती है कि कोरोना संक्रमण के दौरान जहाँ एक तरफ लोग भय के साथ जीवन को गति दे रहे हैं, वहीं क्वारंटाइन सेन्टरों, होम क्वारंटाइन एवं आइसोलेशन के बीच मानव के मनःस्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

महिलाओं, वृद्धों एवं बच्चों की मनःस्थिति के बीच कोरोना वायरस का भय

कोरोना महामारी के दौरान पूरी दुनिया में महिलाओं, वृद्धों एवं बच्चों की मनःस्थिति सबसे ज्यादा प्रभावित हुई है। घरों में बन्द रहने के कारण इन सभी का जीवन नकारात्मक दिशा की तरफ बढ़ा है। कोरोना संक्रमण का प्रभाव पूरी दुनिया में वृद्धों पर अधिक पड़ा है। यदि मृत्यु का आँकड़ा हम देखें तो अन्य की अपेक्षाकृत वृद्धों की मौत अधिक हुई है। इसका नकारात्मक प्रभाव वृद्धों पर भी बड़े स्तर पर पड़ा है। यह स्थिति पूरी दुनिया के लिए बड़ी चुनौती है। वैसे भारत सरकार की तरफ से वृद्धों, बच्चों एवं महिलाओं के मनोवैज्ञानिक समायोजन हेतु अच्छी पहल की गयी है। भारत के शीर्ष नेतृत्व द्वारा इस दिशा में सार्थक प्रयास किया जा रहा है।

परिवार के बीच अपनत्व की भावना में वृद्धि का मनोवैज्ञानिक प्रभाव

कोरोना काल के दौरान हम देखें तो प्रवासी मजदूरों, कामगारों, नौकरी पेशा के लोग अपने कर्मक्षेत्र को छोड़कर परिवारजनों से मिलने की आशा में तेजी से पलायन किये हैं। भूखे, प्यासे हजारों किलोमीटर की पदल यात्रा करते हुए भी घर पहुँचने की एक ललक थी। वास्तव में गाँव, परिवार और अपना घर कल भी लोगों को एक समन्वय के धगे में बाँध रहते थे और आज भी उसी समन्वय की डोर उन्हें अपनी तरफ खींच रही है। वास्तव में यह एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव है। प्रवासी इस बात को जान रहे हैं कि गाँव में भी पूरी तरह से रोटी नहीं मिल पायेगी फिर भी वे गाँवों की तरफ लौट रहे हैं।

वास्तव में अपने परिवार में लोग जीना चाहते हैं, तो वहीं मृत्यु को प्राप्त करना भी लोग पसन्द करते हैं। आज परिवार की विशेषता स्पष्ट दृष्टिगोचर है। परिवार ही ऐसी डेर है, जो उन्हें इस भयाक्रान्त अवस्था में भी गाँव एवं घर की तरफ खींच रही है।

कोविड-19 संक्रमण के बाद जिस तरह से लोगों के मन में भय का माहौल बना हुआ है। ठीक उसी प्रकार अपने परिवार, बच्चों को लेकर उनकी मनोवैज्ञानिक दृष्टि में भी बदलाव आया है। आज जो अपने घरों को छोड़कर आये हैं, उनमें सबसे ज्यादा प्रवासी मजदूर ह। जो अपने माता-पिता बच्चों के लिए पलायन कर रहे हैं। देखा जाय तो कोरोना वायरस क भय के कारण जिस तरह से परिवार के बीच अपनत्व की भावना में वृद्धि का मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा है, उसी तरह समाज में रहने वाले सभी व्यक्तियों पर पड़ा है।

जागरूकता में वृद्धि

वैसे दुनियां में कम्प्यूटर, इंटरनेट एवं अन्य संचार के माध्यमों के प्रयोग के बाद जागरूकता बड़े स्तर पर बढ़ी है। आज लोगों को लगता है कि हम एक ऐसे जगह पर ह, जिसके चारों तरफ सभी चीजें विद्यमान हैं। वैसे गुगलकालीन दुनियां ने तो लोगों को पूरी तरह बदल कर रख दिया है। आज लोग कोरोना संक्रमण के बाद अपने स्वास्थ्य एवं अपनी जिम्मेदारी को लेकर अधिक सजग एवं गंभीर हुए हैं। यह एक बड़ा मनोवैज्ञानिक बदलाव है। आज हम बाहर जीवन से जुड़ी सामग्री लेने के लिए निकलते हैं तो मास्क, सेनिटाइजर, ग्लब्स लेकर निकलते हैं, तो वहीं दुकानदार भी कोरोना जैसे संकट को लेकर सजग दिखता है। वह भी आज अपने स्वास्थ्य के प्रति, अपनी जिम्मेदारियों के प्रति, देश का नागरिक होने के प्रति प्रतिबद्ध दिखता है। इस तरह कहा जा सकता है कि कोविड-19 महामारी के बाद पूरी दुनियां में बड़े स्तर पर लोगों में अपने स्वास्थ्य एवं अपनी जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

वित्तीय स्वतंत्रता खोने का मनोवैज्ञानिक पक्ष

आज जिस तरह से पूरी दुनियां की अर्थव्यवस्था डूब रही है, उससे वित्तीय स्वतंत्रता खोने का एक मनोवैज्ञानिक डर बना हुआ है। इस स्थिति को भारत के लिए ही नहीं, वरन् पूरी दुनियां के संदर्भों में देखा जा सकता है। आज अर्थव्यवस्था को लेकर इस धरा का प्रत्येक मानव चिन्तित एवं भयभीत है। आज जिस तरह से रोजगार डूब रहे हैं, कम्पनियों बन्द हो रही हैं। वहाँ बी.ए., एम.ए., एम.बी.ए., बी.कॉम, एम.कॉम एवं अन्य योग्यता धारण करने वाले लोग काम एवं नौकरी छूटने के कारण मनरेगा जैसे क्षेत्रों में काम कर रहे हैं, यह एक कड़ी चुनौती है। वैसे भारत सरकार एवं राज्य सरकार रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए सार्थक प्रयास कर रही ह। लेकिन आज रोजगार की जो स्थिति बनी है, वहाँ बड़े

स्तर पर इस तरह के अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है।

वैश्विक पटल पर दीर्घकालिक प्रभाव

वैज्ञानिकों का मानना है कि कोरोना वायरस का दीर्घकालिक प्रभाव जरूर होगा। ऐसी सम्भावनाये विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ-साथ दुनियां के ढेर सारे स्वास्थ्य संगठनों द्वारा भी दी जा रही है। इसलिए सभी को कोरोना से सुरक्षित रहना होगा। साथ ही लोगों को प्रयत्न के साथ जीना भी होगा। आने वाला दौर कोरोना के साथ का दौर होगा। लोगों को मजबूत आत्मबल के साथ जीवन की गाड़ी को आगे बढ़ाना होगा।

कोरोना काल की दुनियां एवं अर्जित प्रस्थिति की अवधारणा

दुनियां के पटल पर काल एवं परिस्थितियों के सापेक्ष प्रदत्त एवं अर्जित परिस्थिति, क्षेत्र का महत्व रहा है। परन्तु कोरोना काल की दुनियां में जिस तरह की संरचना निर्मित हो रही है, वहाँ अर्जित प्रस्थिति का महत्व बढ़ा है और आने वाले समय में और बढ़ा है। नयी तकनीक एवं तर्कणा के स्वरूप बड़े स्तर पर ढूँढे जायेंगे। आत्मनिर्भरता की तरफ लोकजन के कदम बड़े स्तर पर बढ़ेंगे। आत्मनिर्भरता के कारण समाज में अर्जित प्रस्थिति का महत्व भी बड़े स्तर पर बढ़ेगा। कोरोना के बाद की दुनियां पूरी तरह से अर्जित प्रस्थिति पर आधारित होगी।

कुछ समय तक भय का माहौल

कोविड-19 संक्रमण और लॉकडाउन के बाद जिस तरह की संरचना पूरी दुनियां में निर्मित हुई है, वहाँ मानव से मानव के बीच भय का खौफ सताये जा रहा है। वैसे यह स्थिति भारत ही नहीं, वरन् पूरी दुनियां की है। आज एक मित्र अपने मित्र को आमने-सामने बैठने-बैठाने पर संशकित नजर से देखता है। एक ही प्रोफेशन से जुड़े लोग एक दूसरे के आमने-सामने बैठने पर संशकित हो रहे हैं। यहाँ हम देखें तो सिक्के का यह एक पक्ष है, मानव शरीर में भय रहने से कोविड-19 की सुरक्षा की गारंटी भी है तो दूसरी तरफ मानव का मानव से भय उन्हें अलग-थलग रखने के लिए मजबूर कर रहा है। यह भय का माहौल लम्बे समय तक बना रहेगा। लोगों को इसी भय के माहौल में जीवन का पाठ पढ़ना और पढ़ाना होगा।

सुरक्षा का कड़ाई से पालन

कोरोनाकालीन दुनियां में मानव को एक सबसे बड़ा सबक मिला है कि लोकजन को प्रत्येक क्षेत्र में कड़ाई एवं गम्भीरता के साथ सुरक्षा की वैचारिकी को आत्मसात करना होगा। राज्य एवं सरकार भी इस दिशा में पूरी कठोरता के साथ सुरक्षा का दायित्व पूरा कर रही है। सुरक्षा की वैचारिकी को आत्मसात करके ही हम इस महामारी पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। कोरोना के हमारे योद्धा सुरक्षा हेतु

चुस्त, तन्दरूस्त एवं कड़ी नजर बनाये हुए हैं। वैसे सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित कराने हेतु राज्य एवं सरकारों के साथ-साथ कोरोना योद्धाओं का सतत् प्रयास जारी है। इस नाते आम लोकजन को भी पूरी मुस्तैदी के साथ सुरक्षा मानकों का पालन करना होगा। तभी शायद हम कोरोना जैसी महामारी एवं इससे उत्पन्न संकट पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

कोविड-19 महामारी के बीच हताशा एवं गुस्से का जन्म

कोविड-19 संक्रमण के बाद पूरी दुनियां में लोगों के बीच हताशा एवं गुस्से को जन्म दिया है। यह स्थिति पूरी दुनियां में बड़े स्तर पर देखी जा सकती है। इस चुनौती भरे स्थिति में कैसे बाहर निकलना है, इस पर विमर्श की आवश्यकता है। साथ ही इस दिशा में सार्थक पहल की क्रियान्वित किया जाय।

समापन अवलोकन

कोविड-19 का प्रभाव पूरी दुनियां की मनःस्थिति को एक तरफ जहाँ नकारात्मक रूप में प्रभावित किया है, वहीं दूसरी तरफ इस महामारी से उत्पन्न चुनौतियों से सामना करने के लिए नए ढंग से जीने के लिए भी लोग प्रेरित हैं। वैसे कोविड-19 महामारी के मनोवैज्ञानिक प्रभाव के रूप में डिप्रेशन, आत्महत्या, तनाव, चिड़चिड़ापन, अवसाद जैसी मनोवैज्ञानिक समस्याओं से मानव जीवन बड़े स्तर पर प्रभावित हुआ है। खासकर बच्चे, महिलाएं, एवं वृद्धों का जीवन अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित हुआ है। विविध स्तरों पर लोगों के बीच एक ऐसे डर का माहौल बना हुआ है, जिससे लोग लम्बे समय के बाद ही मुक्त हो पायेंगे। मानव जीवन में एक दूसरे पर विश्वास की वैचारिकी कमजोर पड़ेगी। लेकिन जागरूकता का मनोवैज्ञानिक पाठ भी लोग याद रखेंगे।

पठनीय ग्रंथ

पारसंस, टालकट (1968) : दी सोशल सिस्टम, फ्री प्रेस, न्यूयार्क।

पेज, सी.एच. एवं आर. एम., मैकाइवर (1949) : द सोसाइटी: एन इंट्रोडक्टरी एनालिसिस, दी यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिसीगन।

गांधी, महात्मा (2008) : मेरे सपनों का भारत, राजपाल एण्ड संस, नई दिल्ली।

कुमार, सतेन्द्र (2018) : बदलता गाँव बदलता देहात, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस भारत।

समाचार पत्र : बी. बी. सी., दी हिन्दू, टाइम्स ऑफ़ इंडिया, नवभारत टाइम्स, एन. डी. टीवी, दी.वायर, पी. टी. आई।

Baldwin, James Mark (1911) : *The Individual and Society: Or, Psychology and Sociology*,
R. G. Badger

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Rosenberg, Morris & Ralph H. Turne (1990) : Social Psychology: Sociological Perspectives, Transaction Publishers

DeLamater, John (2006) : Handbook of Social Psychology, Springer Science & Business Media

Christine M. Von Der Haar (2009) : Social Psychology: A Sociological Perspective, Prentice Hall PTR

Burke, Peter James (2006) : Contemporary Social Psychological Theories, Stanford University Press